आदिवासी स्कूल

लेखक: ईव बंटिंग, चित्र: इरविंग टोडी
हिंदी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

आदिवासी स्कूल

लेखक: ईव बंटिंग, चित्र: इरविंग टोडी
हिंदी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

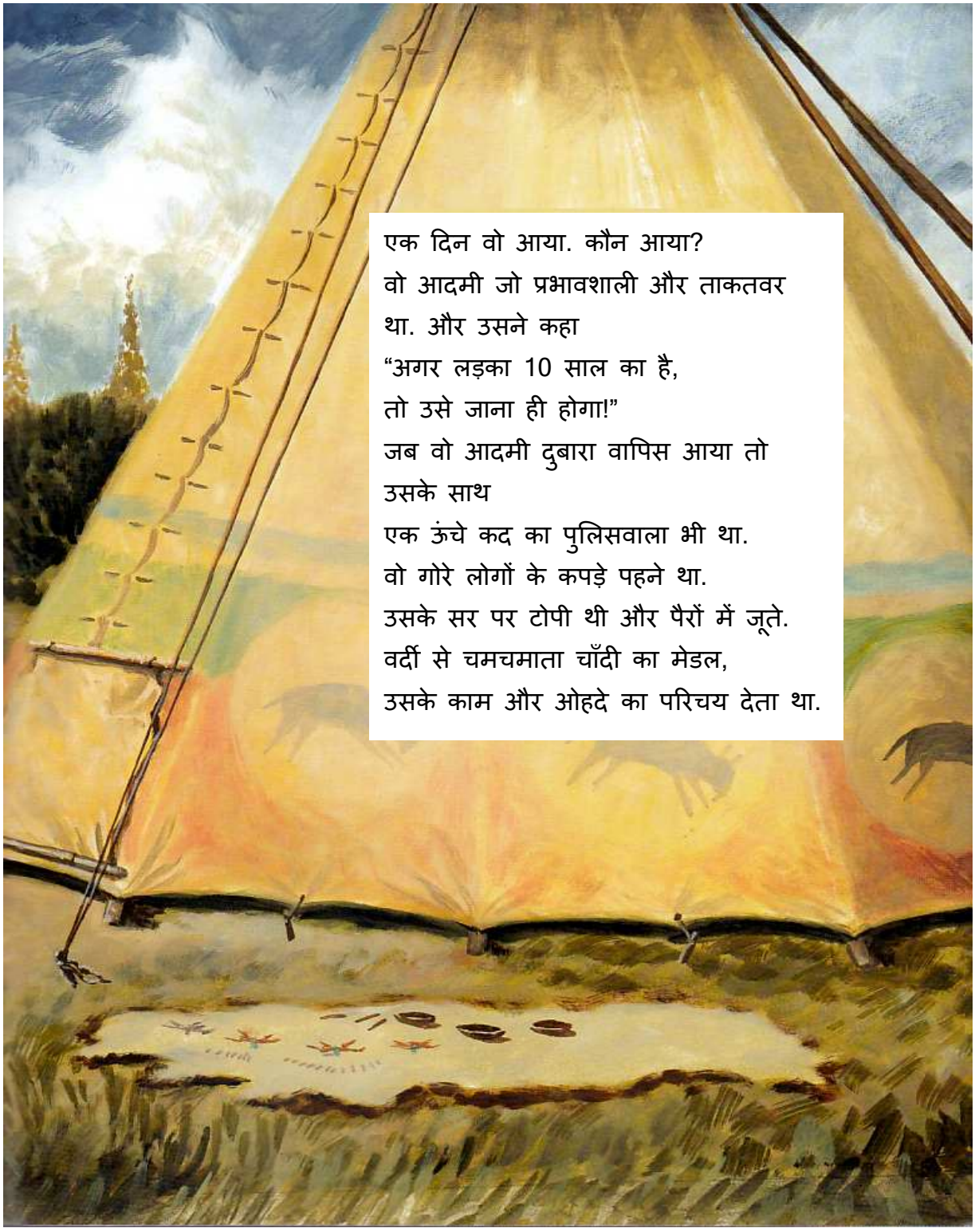

एक दिन वो आया. कौन आया?
वो आदमी जो प्रभावशाली और ताकतवर
था. और उसने कहा
“अगर लड़का 10 साल का है,
तो उसे जाना ही होगा!”
जब वो आदमी दुबारा वापिस आया तो
उसके साथ
एक ऊंचे कद का पुलिसवाला भी था.
वो गोरे लोगों के कपड़े पहने था.
उसके सर पर टोपी थी और पैरों में जूते.
वर्दी से चमचमाता चाँदी का मेडल,
उसके काम और ओहदे का परिचय देता था.

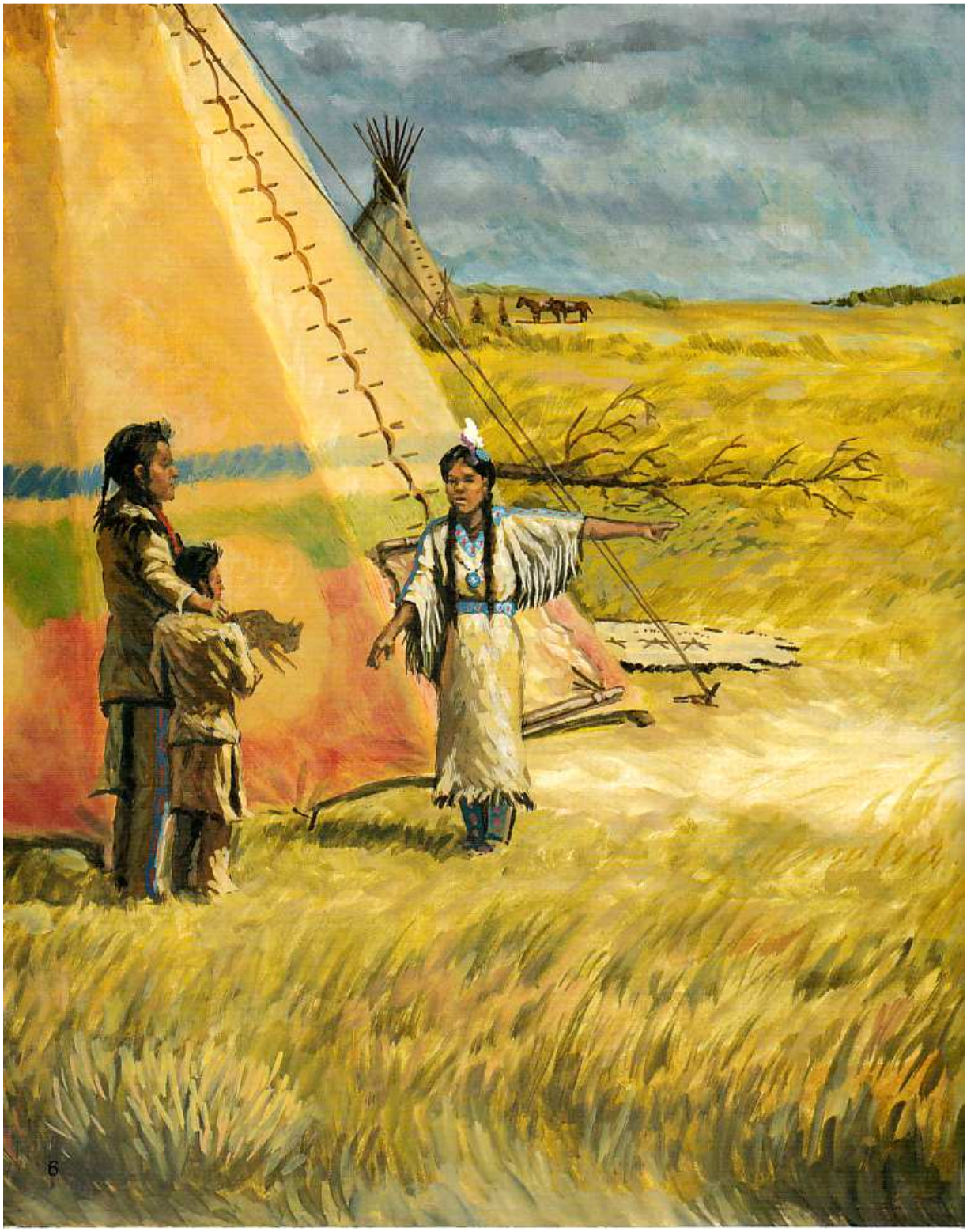

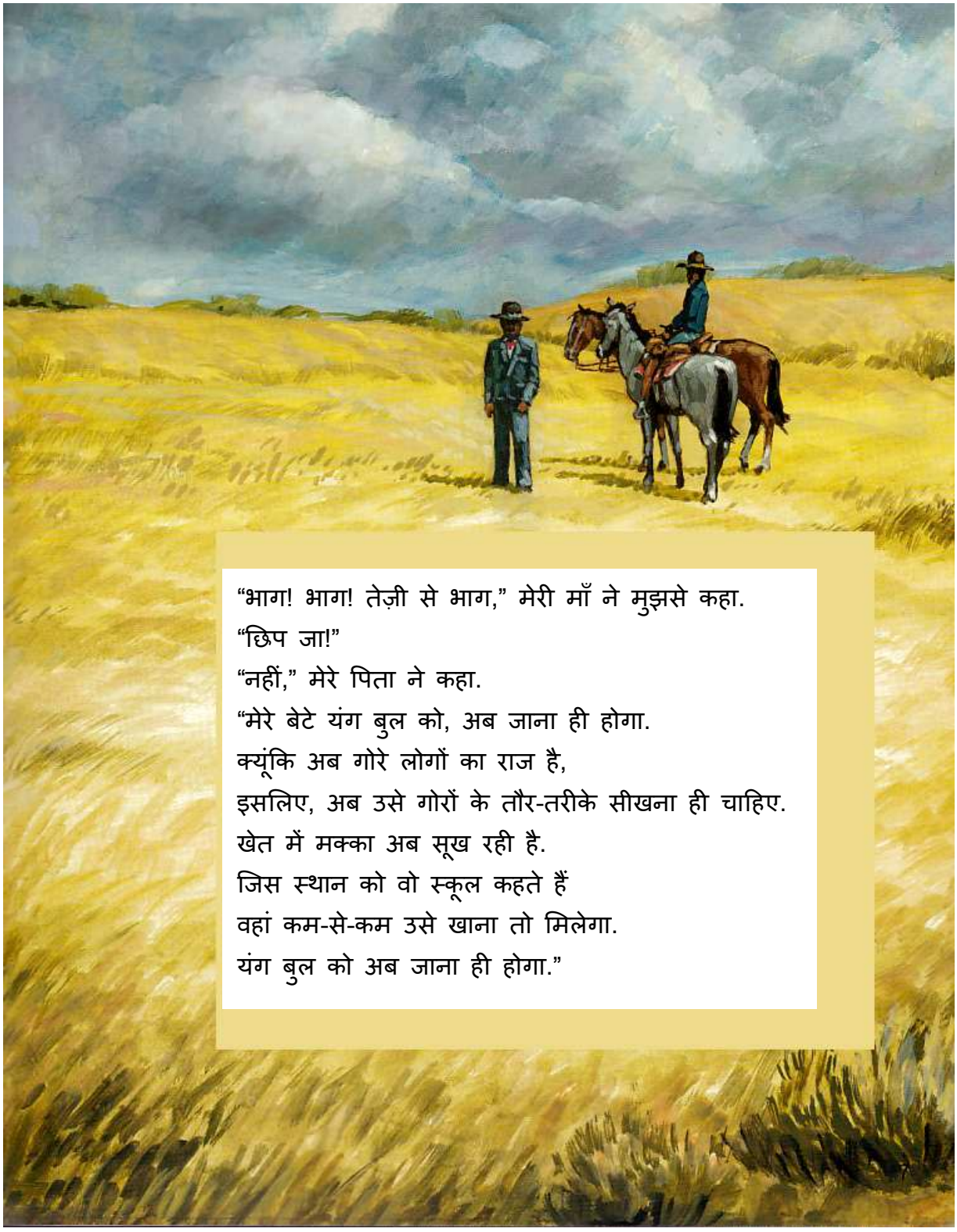

“भाग! भाग! तेज़ी से भाग,” मेरी माँ ने मुझसे कहा.
“छिप जा!”
“नहीं,” मेरे पिता ने कहा.
“मेरे बेटे यंग बुल को, अब जाना ही होगा.
क्यूंकि अब गोरे लोगों का राज है,
इसलिए, अब उसे गोरों के तौर-तरीके सीखना ही चाहिए.
खेत में मक्का अब सूख रही है.
जिस स्थान को वो स्कूल कहते हैं
वहां कम-से-कम उसे खाना तो मिलेगा.
यंग बुल को अब जाना ही होगा.”

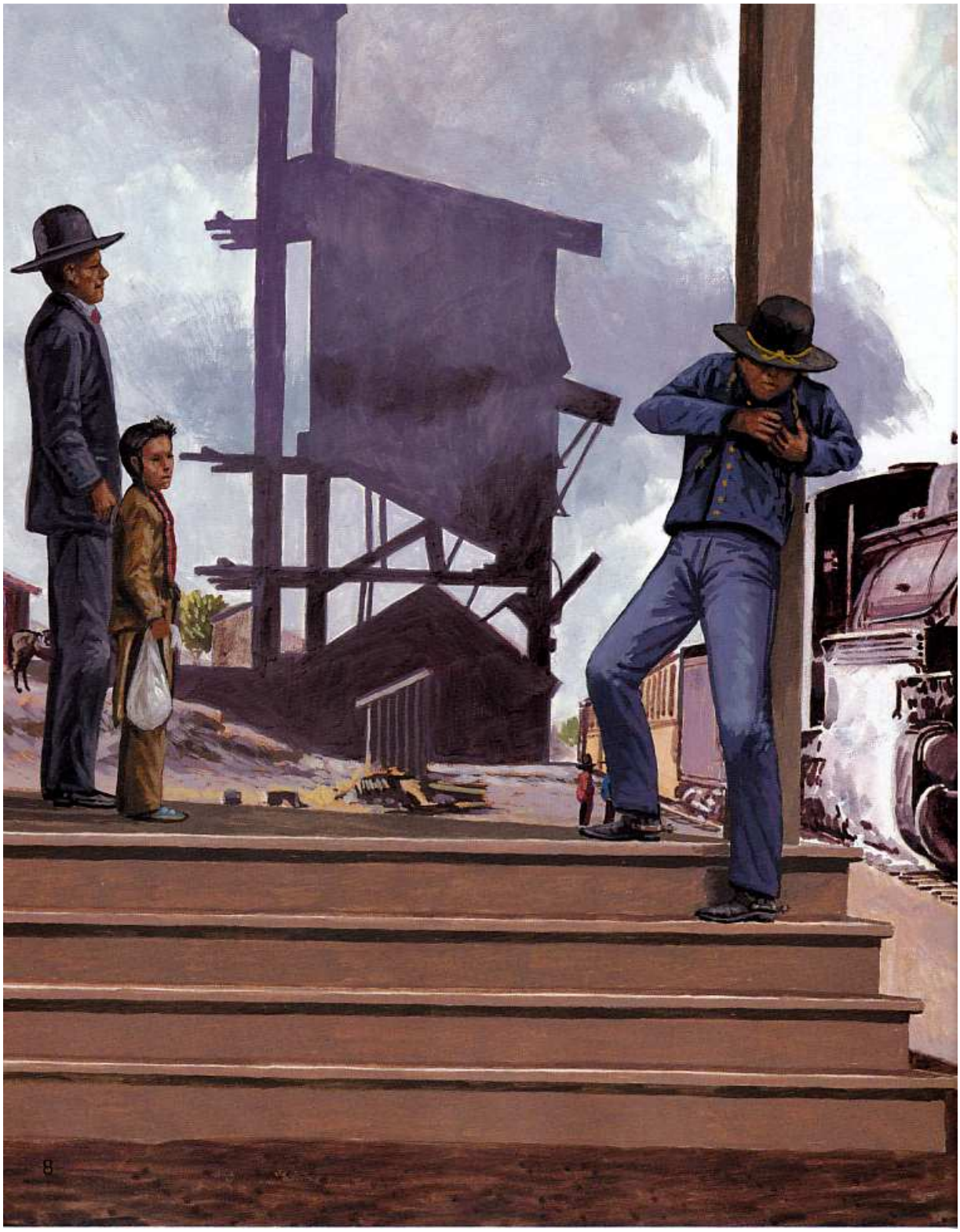

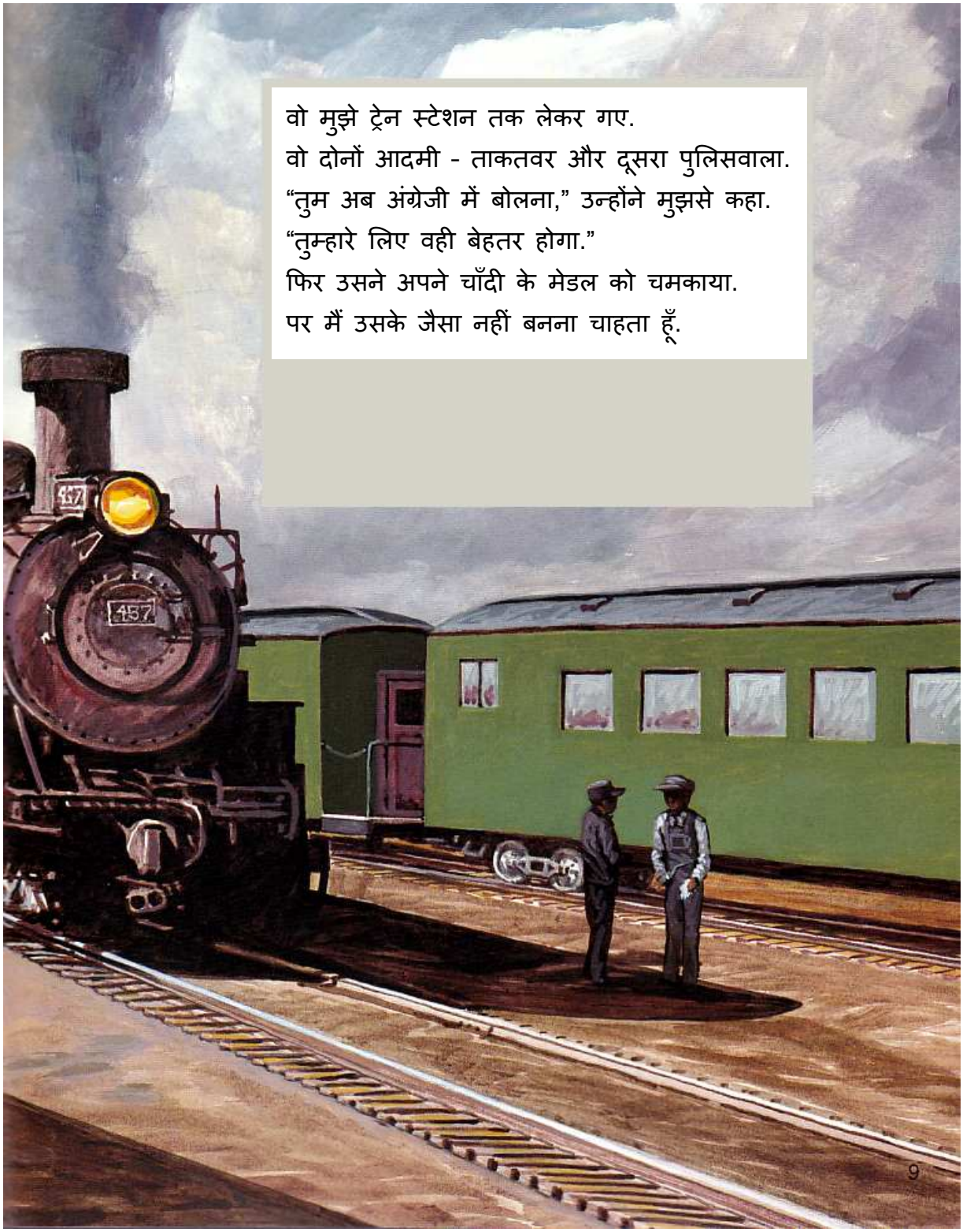

वो मुझे ट्रेन स्टेशन तक लेकर गए.
वो दोनों आदमी - ताकतवर और दूसरा पुलिसवाला.
“तुम अब अंग्रेजी में बोलना,” उन्होंने मुझसे कहा.
“तुम्हारे लिए वही बेहतर होगा.”
फिर उसने अपने चाँदी के मेडल को चमकाया.
पर मैं उसके जैसा नहीं बनना चाहता हूँ.

“यह तुम्हारे सोने का कमरा है,” स्कूल में उन्होंने मुझे बताया.
कितनी खाली है यह जगह!
एक कतार में इतने सारे पलंग!
भाईयों के साथ यहाँ मस्ती करने की कोई उम्मीद नहीं.
धुएं की भी कोई खुशबू नहीं.
ज़मीन पर कोई दरी या कालीन नहीं.
मुझे यहाँ बहुत अकेला लगेगा.

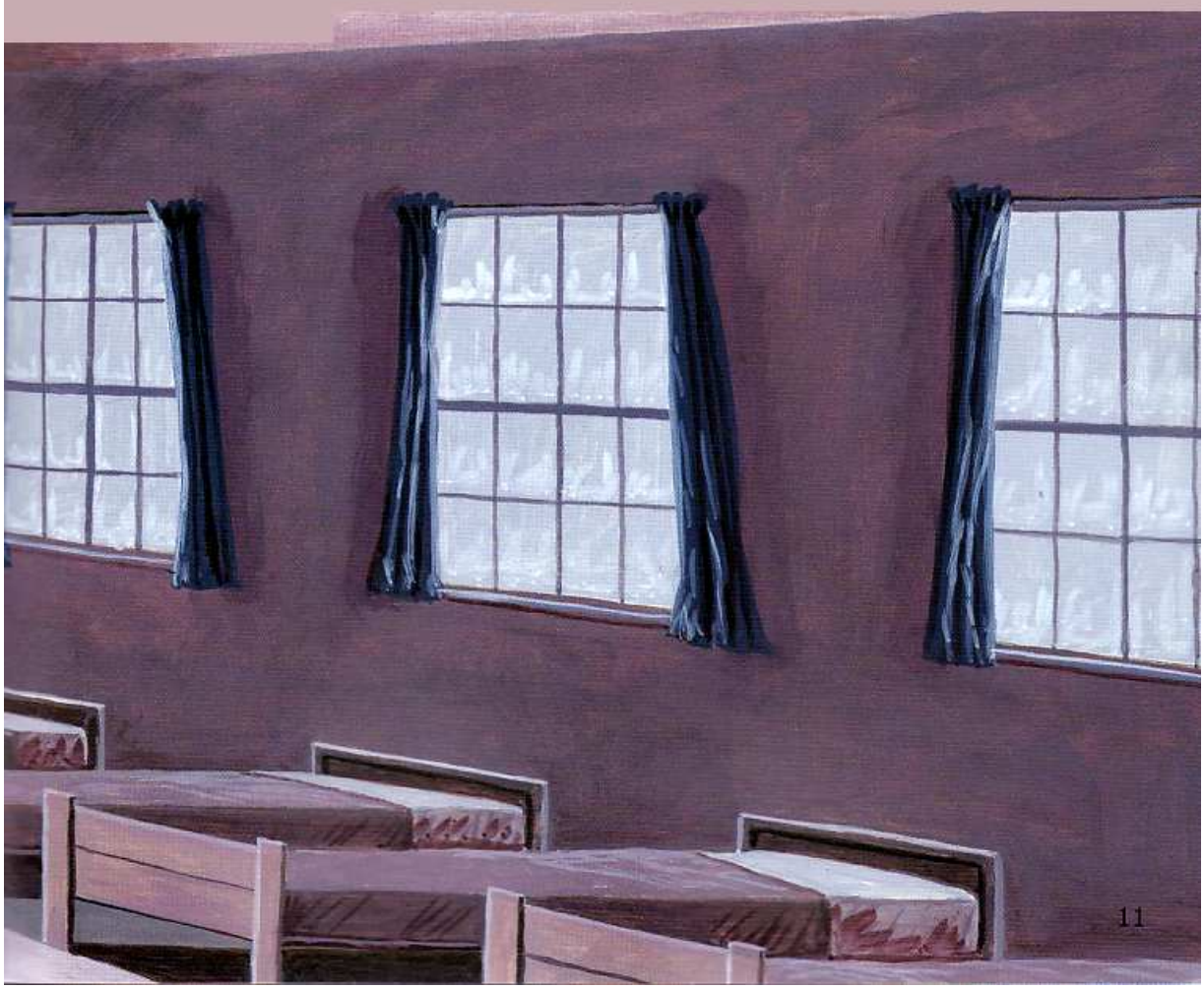

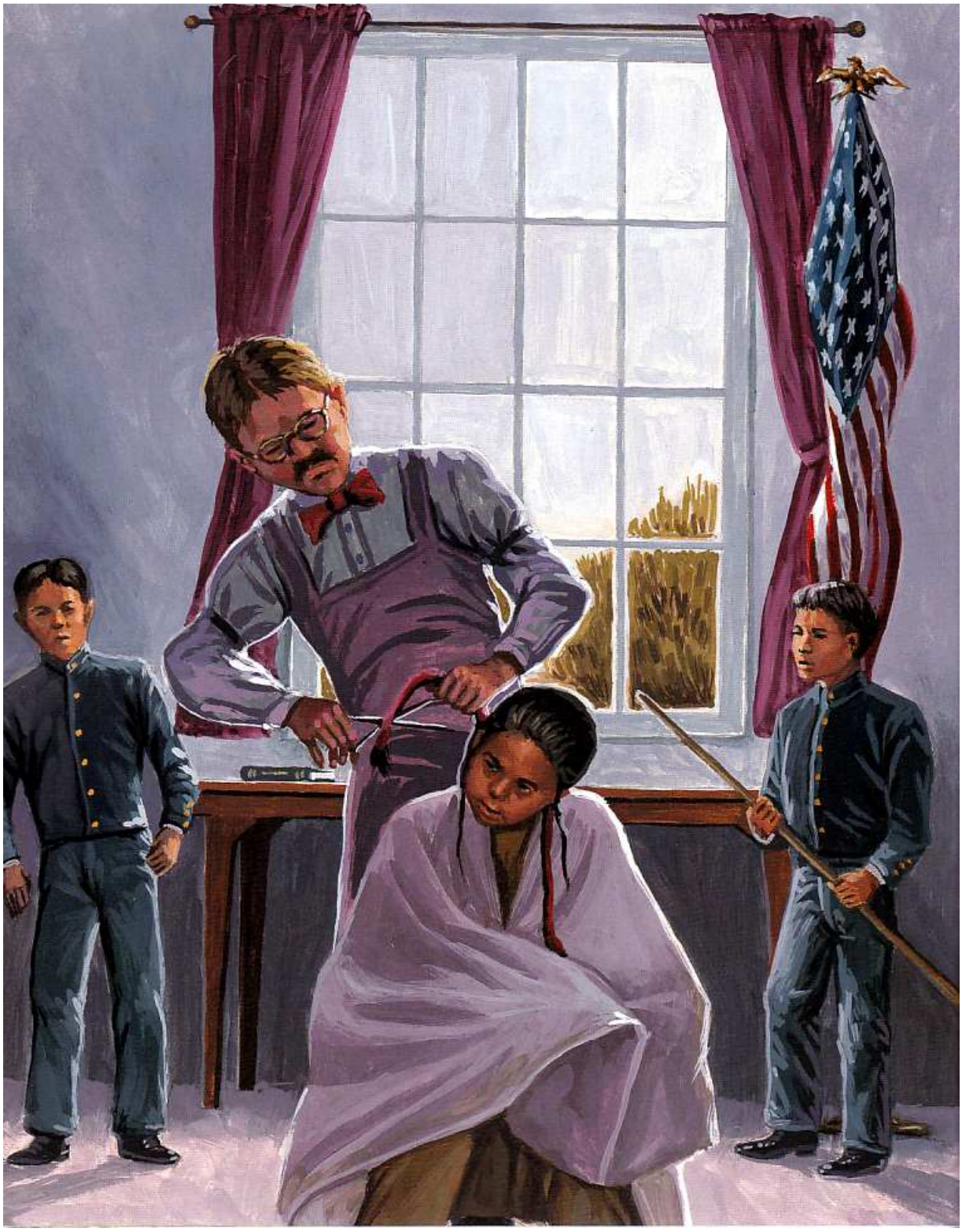

मैं अपने साथ एक हिरण की खाल लाया था.
मेरी कमीज़ और हिरण की खाल, वो छीन लेते हैं.
मेरी माँ ने मेरे लिए मुलायम चमड़े के जूते बनाये थे.
वे उन्हें भी छीन लेते हैं.
मेरे लम्बे बालों को वो काट देते हैं.
फिर मुझे चुभने वाले ऊन की स्कूल यूनिफार्म पहनाते हैं.
यूनिफार्म सिलेटी रंग की है और उसमें गले के पास बटन हैं.
“अब तुम चेयने नहीं रहोगे,” उन्होंने कहा.
“तुमने कुछ भी मूल्यवान नहीं खोया है.
तुम भी हमारे जैसे ही बन जाओगे.”

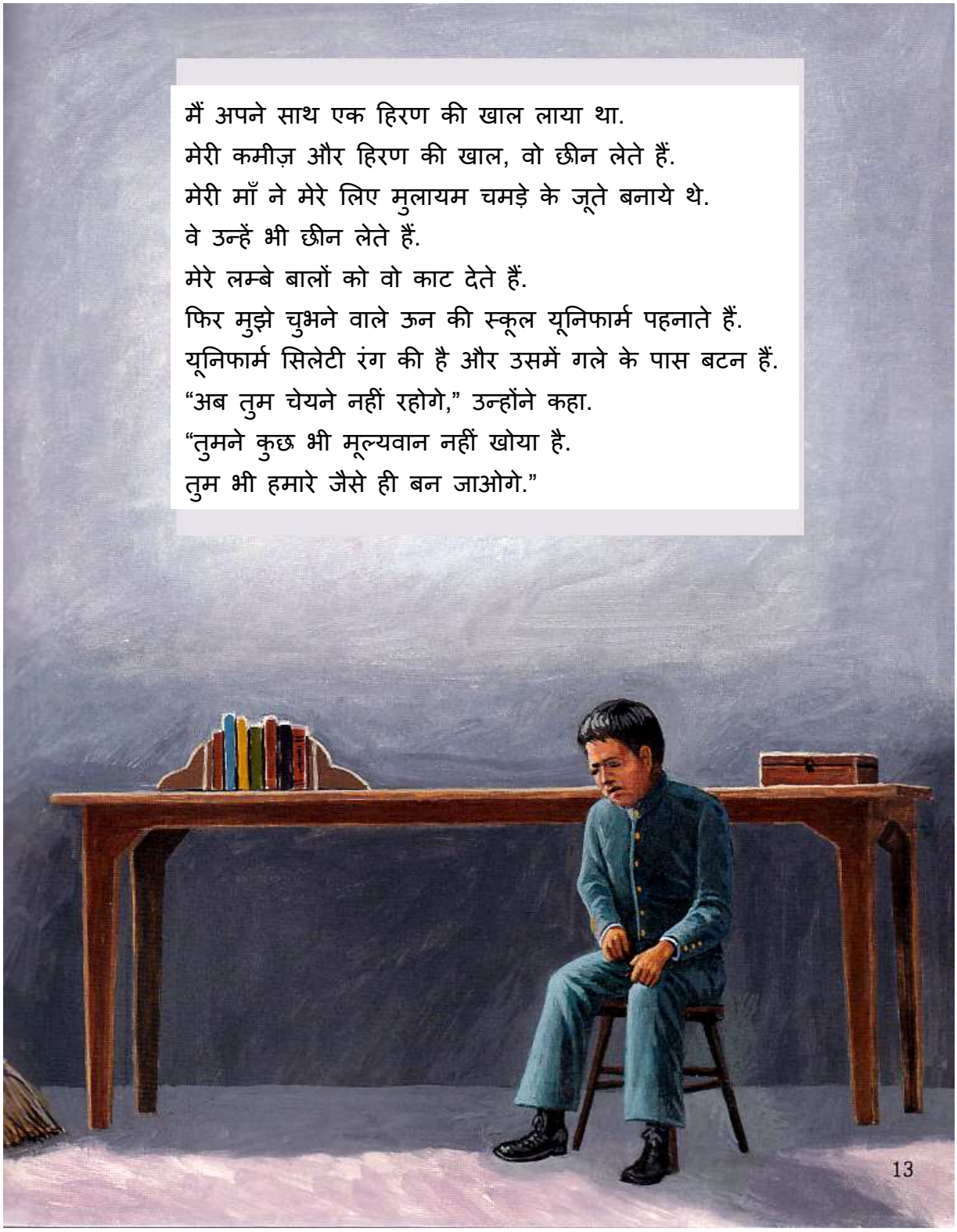

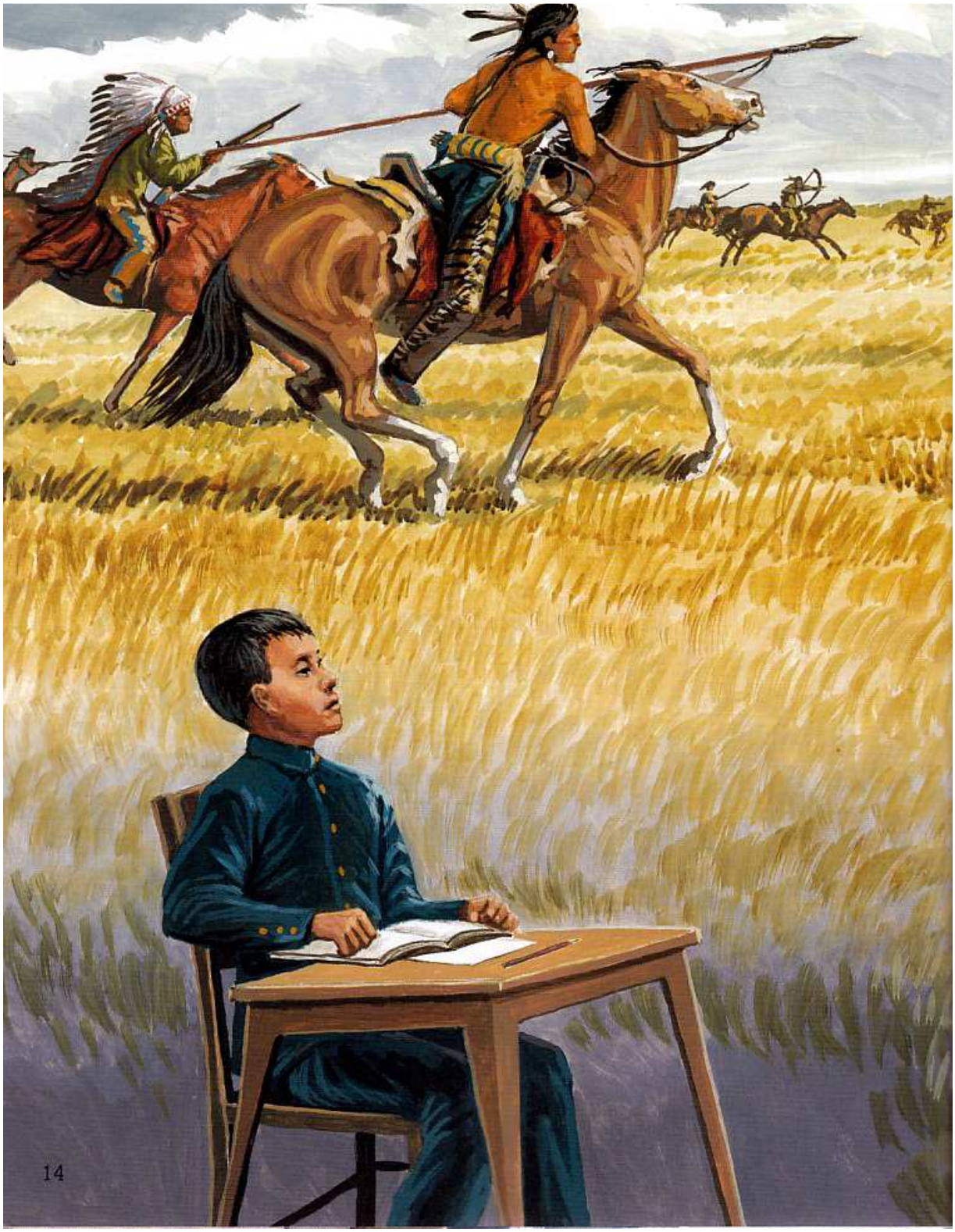

मैं वहां भूगोल, गणित और लिखना सीखता हूँ.
सब कुछ अंग्रेजी जुबान में.
अमरीकी साम्राज्य का इतिहास मैं देखता हूँ
सिर्फ किताबों में.
पर मुझे उसमें कहीं उस युद्ध का कोई उल्लेख नहीं मिलता
जहाँ जनरल कस्टर ने
हमारे बहादुर चेयने और सीओक्स पर हमला किया था.
उनकी किताबें नहीं बतातीं कि हमने उन्हें हराया था.
हमने उन्हें शिकस्त दी थी. उसके बाद हमने उनके मरे लोगों को
नदी के किनारे हमेशा के लिए सोने के लिए छोड़ दिया था.
मेरे लोग इस कहानी को बड़े गर्व से सुनाते हैं.
पर गोरों की किताबों में इसका कोई ज़िक्र नहीं. वो खामोश हैं.

"पढाई पर ध्यान दो; क्लास में बैठ कर सपने मत देखो,"
टीचर ने मुझे फटकार कर कहा.
"क्या तुम सारी ज़िन्दगी एक जाहिल, मूर्ख इंडियन बने रहना
चाहते हो?"
मैंने सिर्फ अपना सर हिलाया.

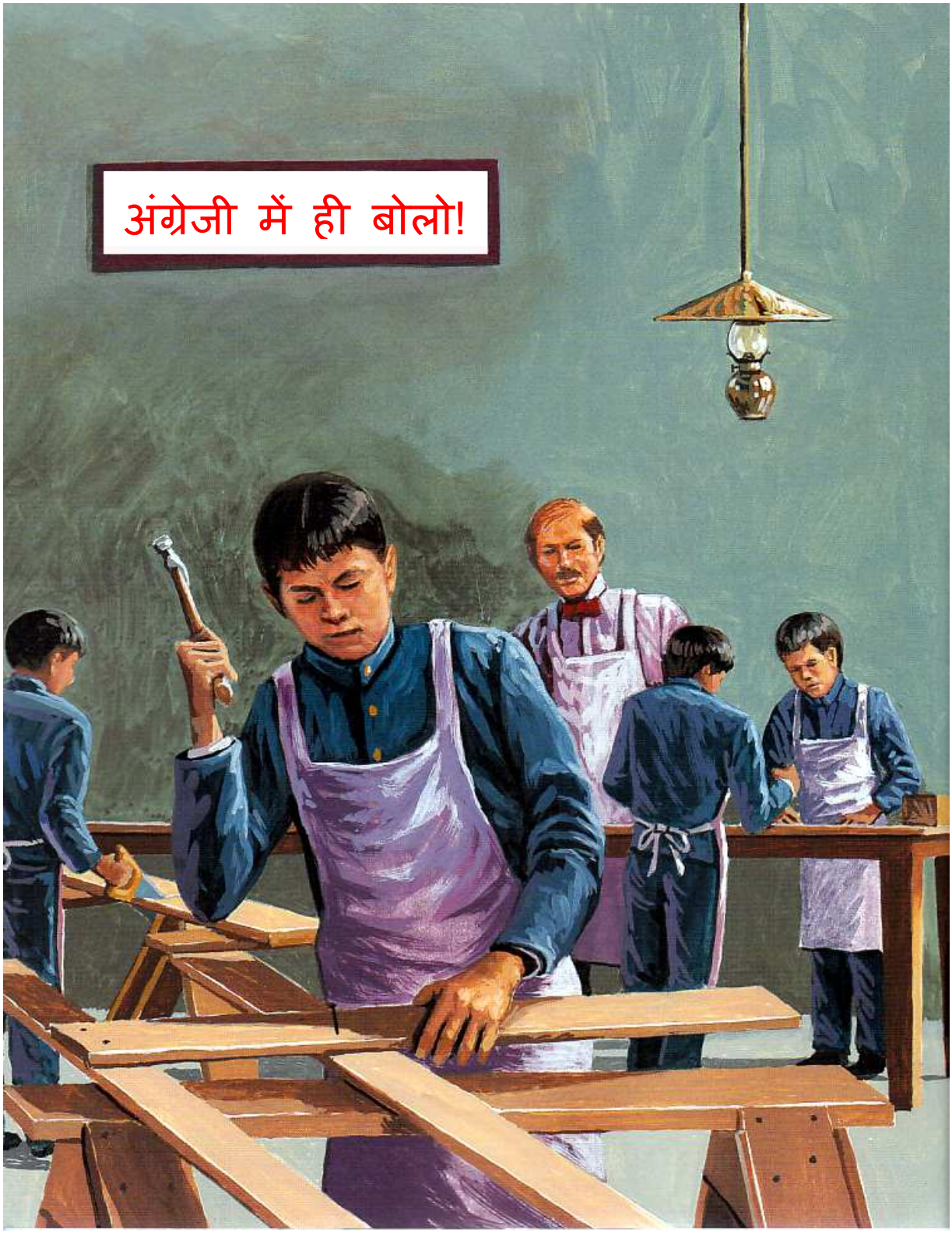
अंग्रेजी में ही बोलो!

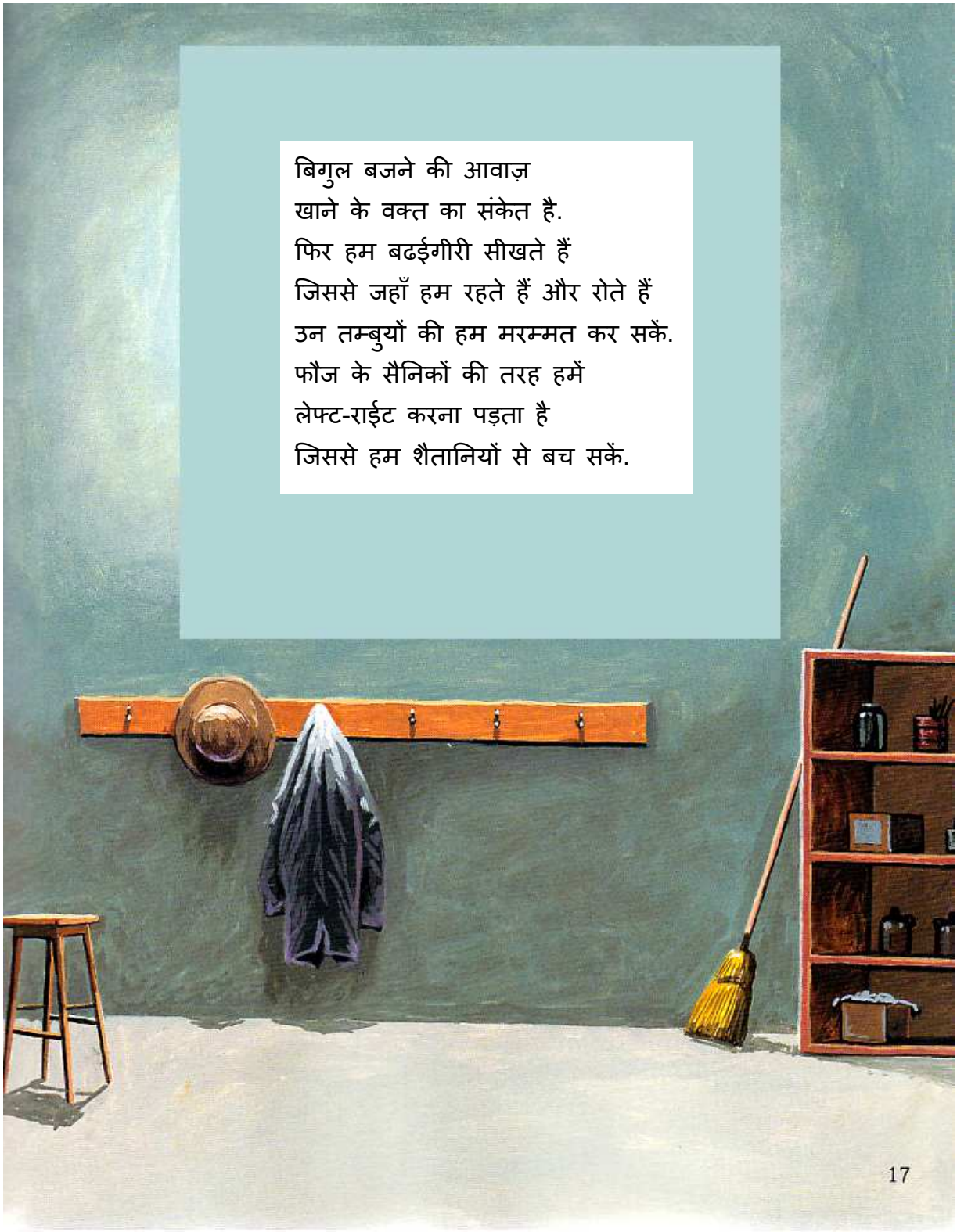
बिगुल बजने की आवाज़
खाने के वक्त का संकेत है.
फिर हम बढ़ईगीरी सीखते हैं
जिससे जहाँ हम रहते हैं और रोते हैं
उन तम्बुयों की हम मरम्मत कर सकें.
फौज के सैनिकों की तरह हमें
लेफ्ट-राईट करना पड़ता है
जिससे हम शैतानियों से बच सकें.

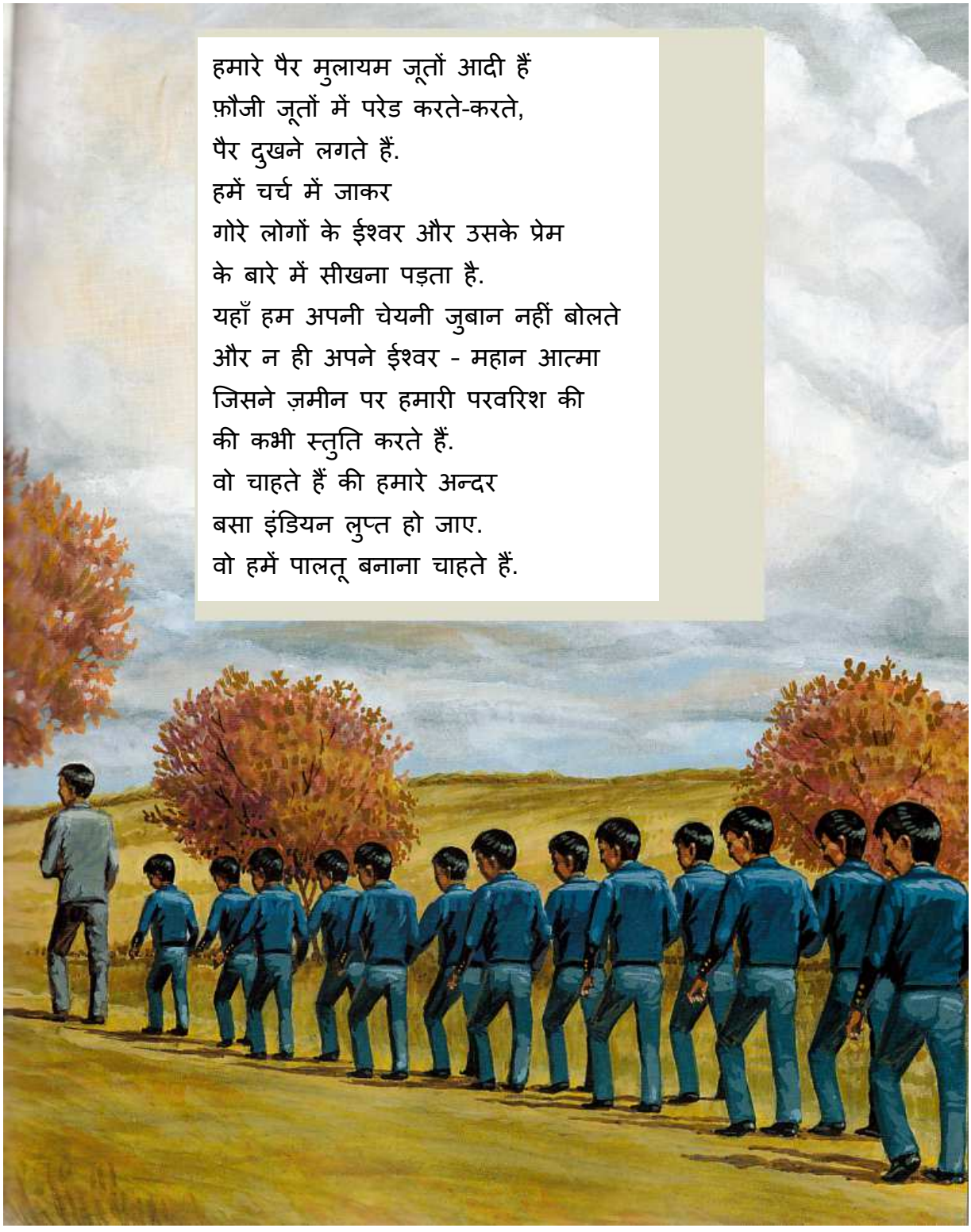

हमारे पैर मुलायम जूतों आदी हैं
फ़ौजी जूतों में परेड करते-करते,
पैर दुखने लगते हैं.
हमें चर्च में जाकर
गोरे लोगों के ईश्वर और उसके प्रेम
के बारे में सीखना पड़ता है.
यहाँ हम अपनी चेयनी जुबान नहीं बोलते
और न ही अपने ईश्वर - महान आत्मा
जिसने ज़मीन पर हमारी परवरिश की
की कभी स्तुति करते हैं.
वो चाहते हैं की हमारे अन्दर
बसा इंडियन लुप्त हो जाए.
वो हमें पालतू बनाना चाहते हैं.

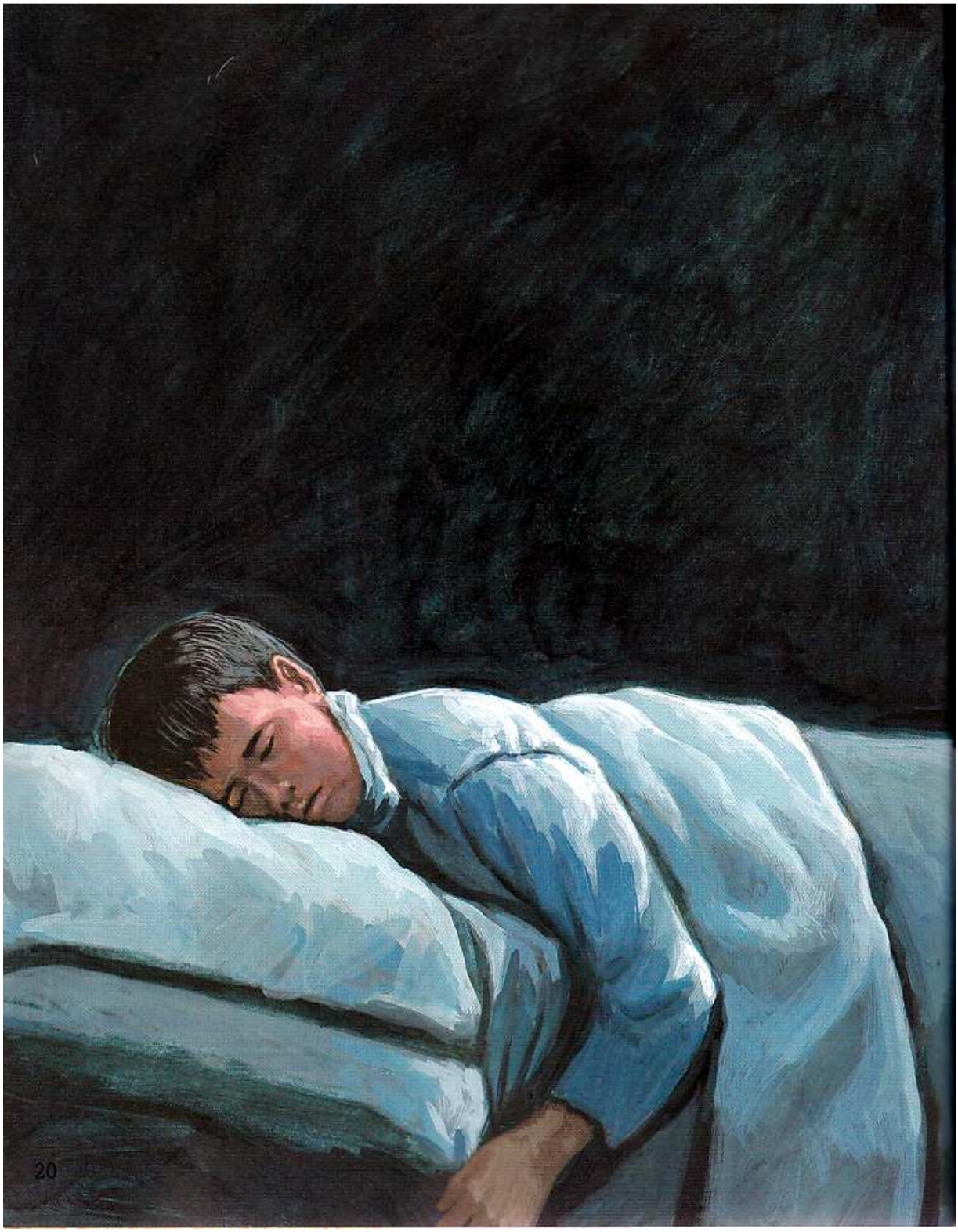

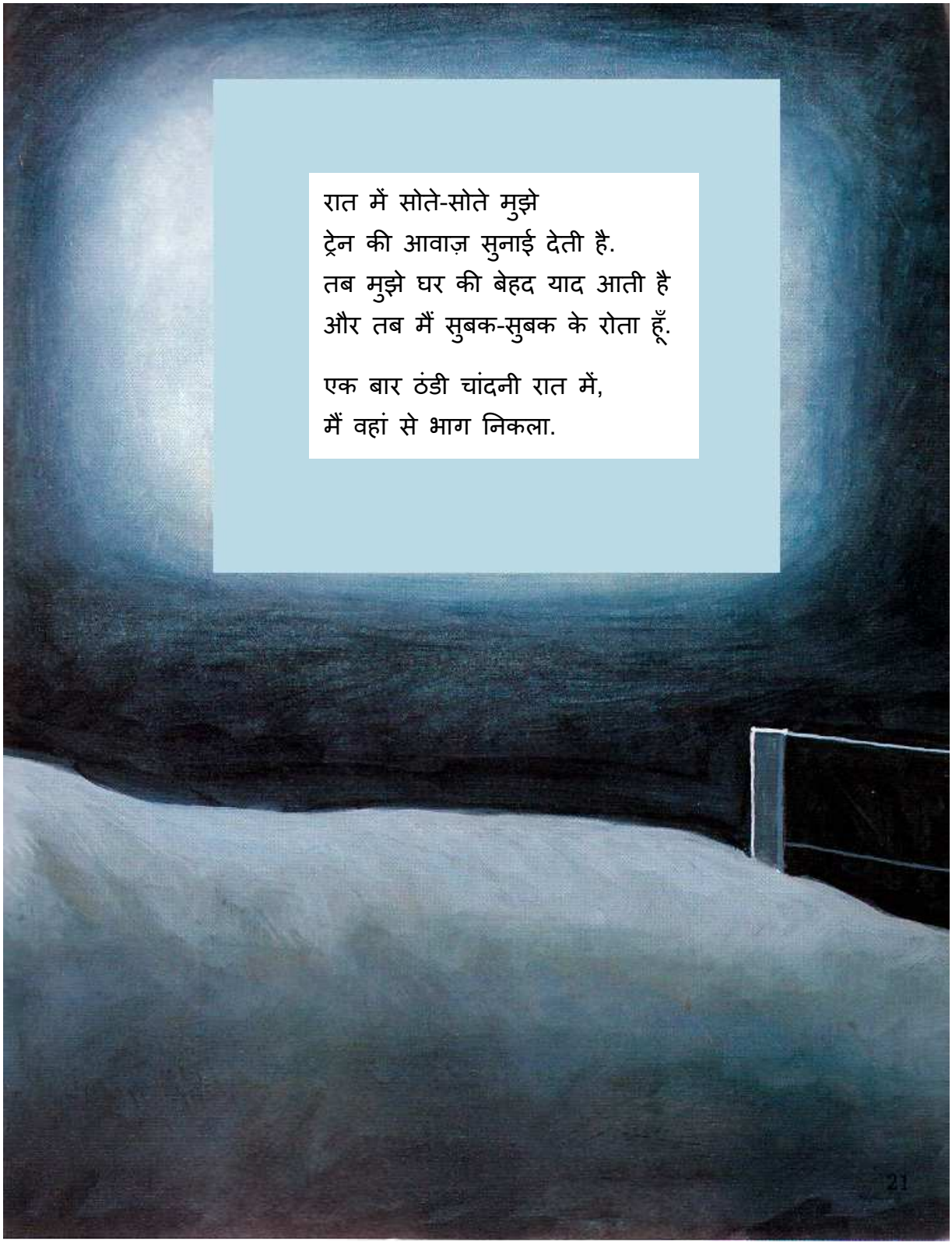
रात में सोते-सोते मुझे
ट्रेन की आवाज़ सुनाई देती है.
तब मुझे घर की बेहद याद आती है
और तब मैं सुबक-सुबक के रोता हूँ.
एक बार ठंडी चांदनी रात में,
मैं वहां से भाग निकला.

गहरी मुलायम बर्फ में मेरे पांव धंसने लगे.
मेरे पास न तो घोड़ा था,
और न सफ़र के लिए खाना.
मेरे पास सिर्फ वो पवित्र पत्थर था,
जो कभी मेरी माँ ने मुझे दिया था.
उस पत्थर ने तमाम सर्द हवाएं और तूफ़ान झेले थे,
और वो अभी भी पुख्ता था.
मैं ताकत के लिए उसे कसकर पकड़े रहता हूँ.

फिर सामने से एक तेज़ बर्फ का तूफ़ान आता है.
वो मुझे घेर लेता है.
मैं अब दौड़ भी नहीं सकता हूँ.

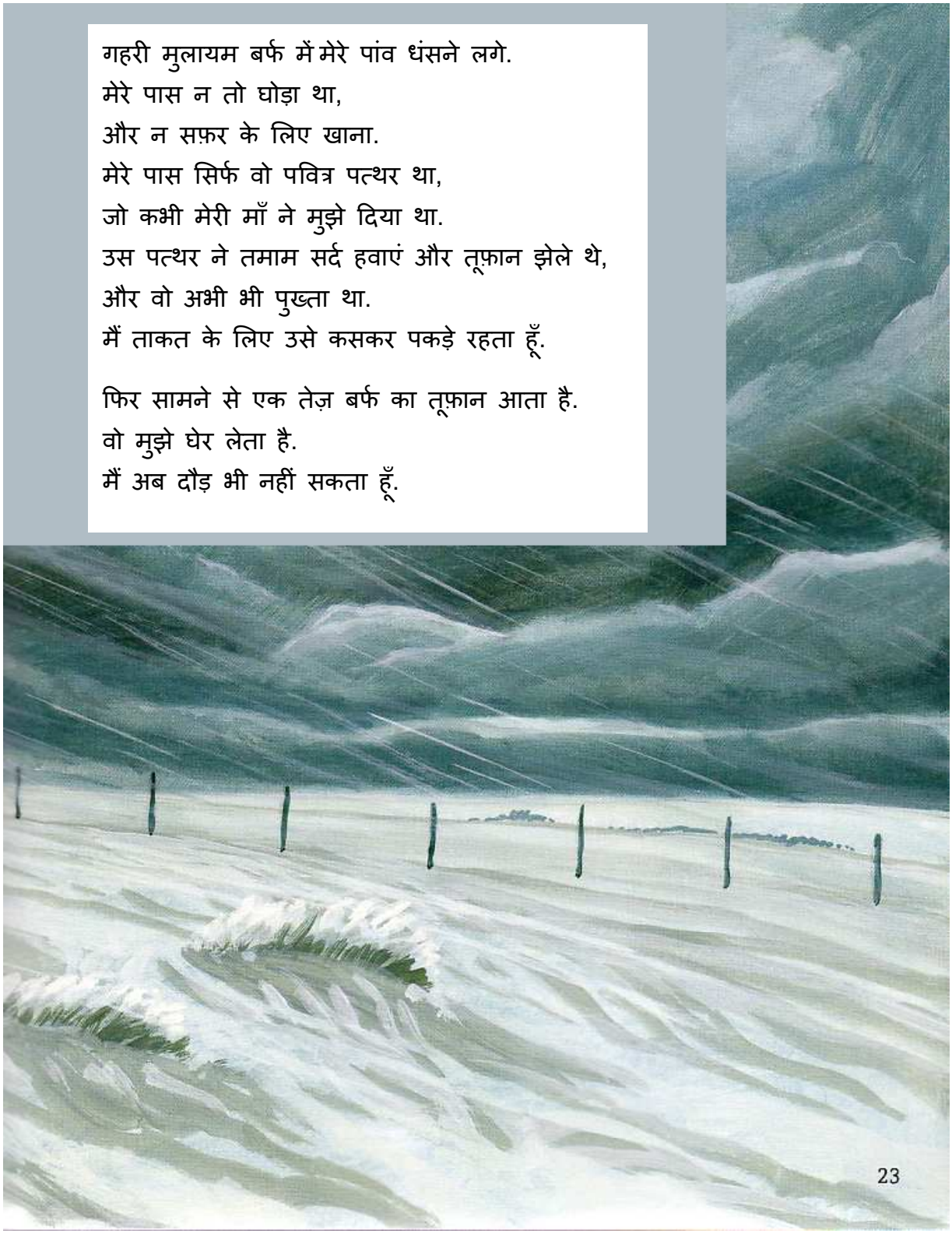

स्कूल के सिपाही
मुझे वहां खोजते हुए आ पहुँचते हैं
वे मुझे वापिस स्कूल ले जाते हैं.
हर भागे हुए बच्चे को पकड़ने के लिए
सिपाहियों को पांच डॉलर के ईनाम जो मिलता है.

वो मेरे पैर के टखनों में
एक दिन के लिए लोहे की
एक भारी गेंद को चेन से बांधते हैं.
“स्कूल में अनुशासन होना चाहिए,” वो कहते हैं.

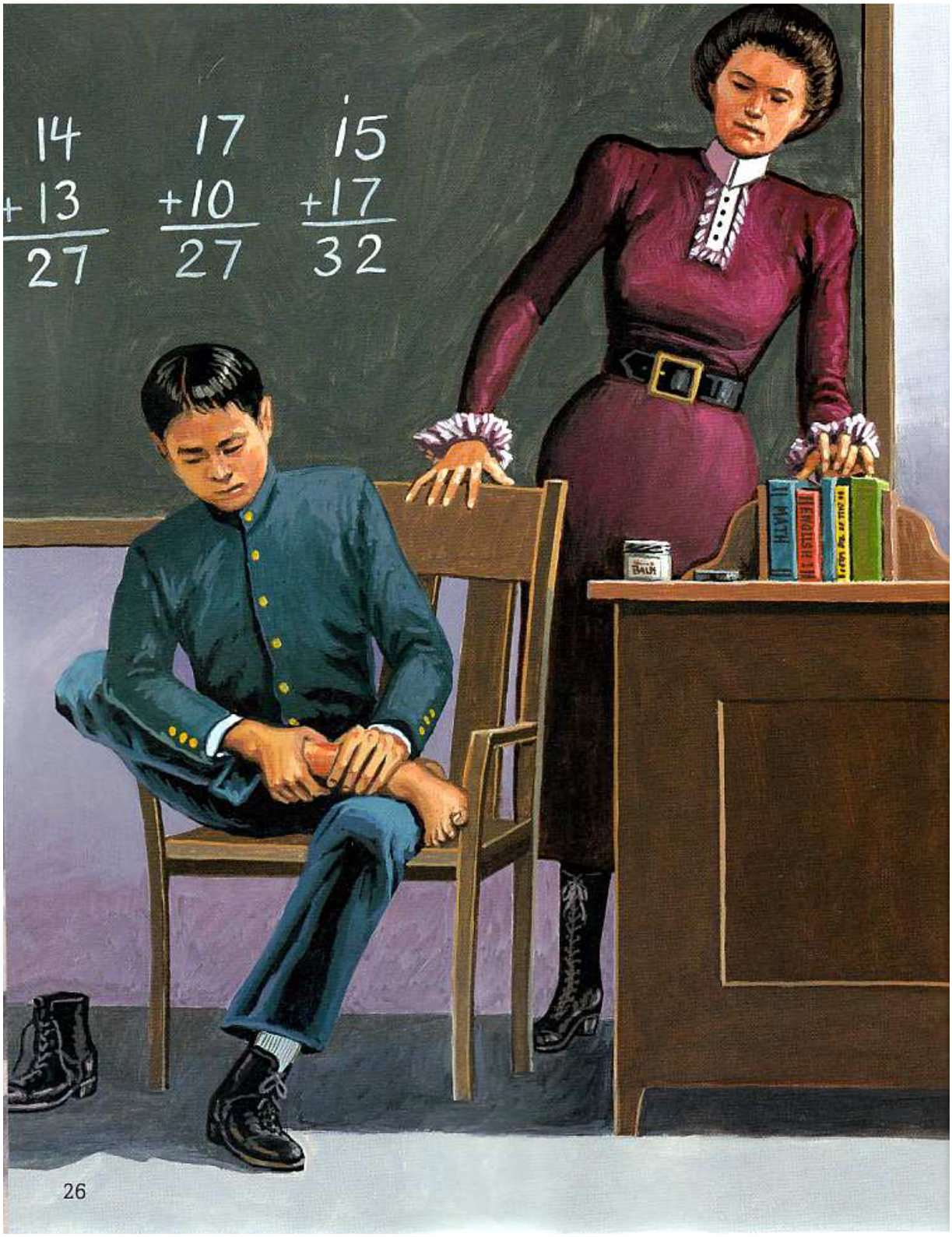
14
+13
27
17
+10
27
15
+17
32
MATH
HISTORY
GLUE

यहाँ एक टीचर हैं जो मुझे अच्छी लगती हैं.
“हमारी दुनिया बहुत तेज़ी से बदल रही है,” वो कहती हैं.
“हम सभी को बदलना चाहिए.
मुझे लगता है की तुम यहाँ जो कुछ भी सीखोगे
वो एक दिन तुम्हारे काम आएगा.
पर यह काम आसान नहीं, काफी कठिन होगा.”
चेन ने मेरे पैर को जहाँ रगड़ा था
उस चोट पर लगाने के लिए वो मुझे मलहम देती हैं.
“हाँ, यह बात कभी नहीं भूलना
कि तुम अन्दर से हमेशा इंडियन रहोगे.
अपनी यादों को संजों कर रखना,
जिससे हम उन्हें कभी छीन न पायें.”

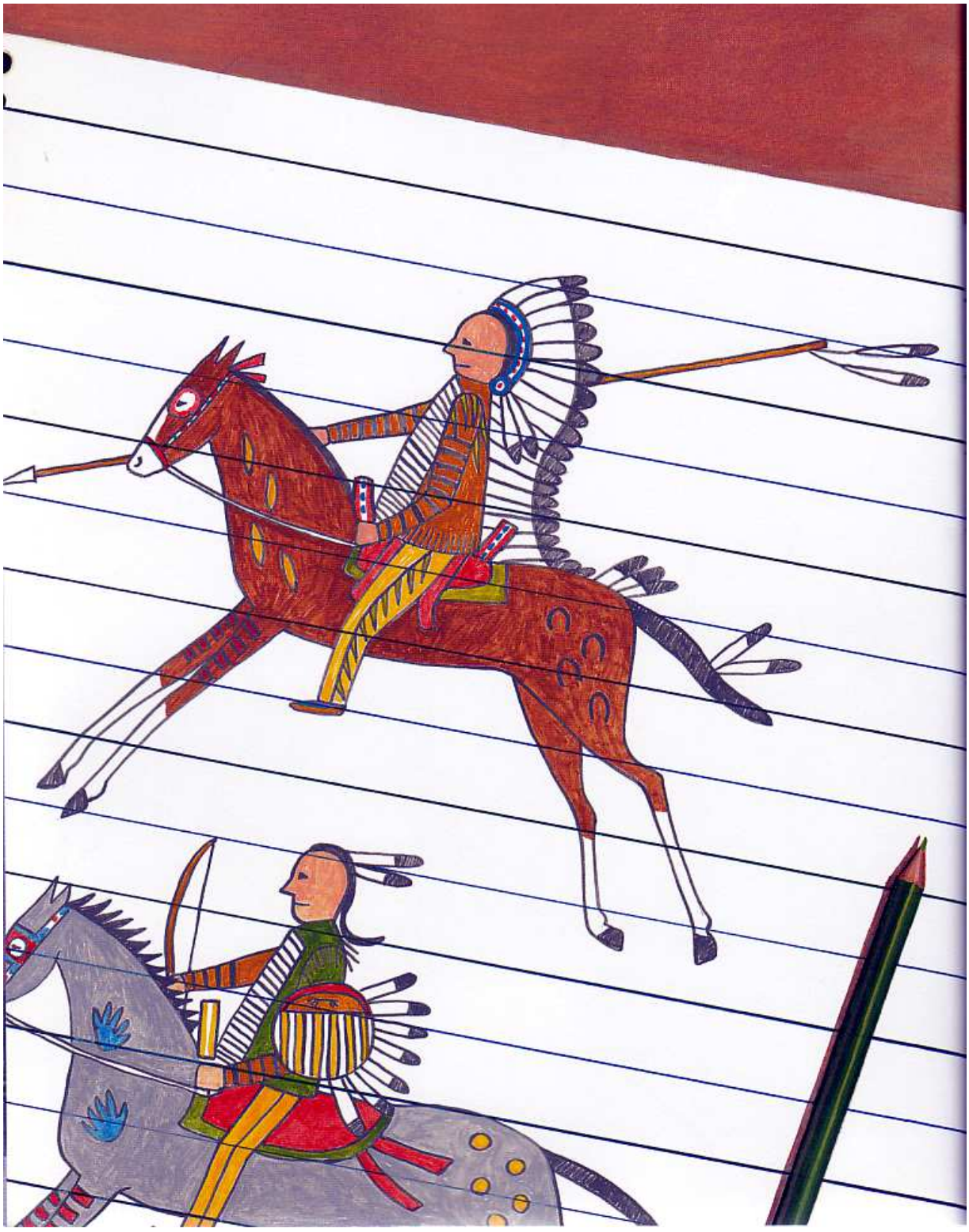

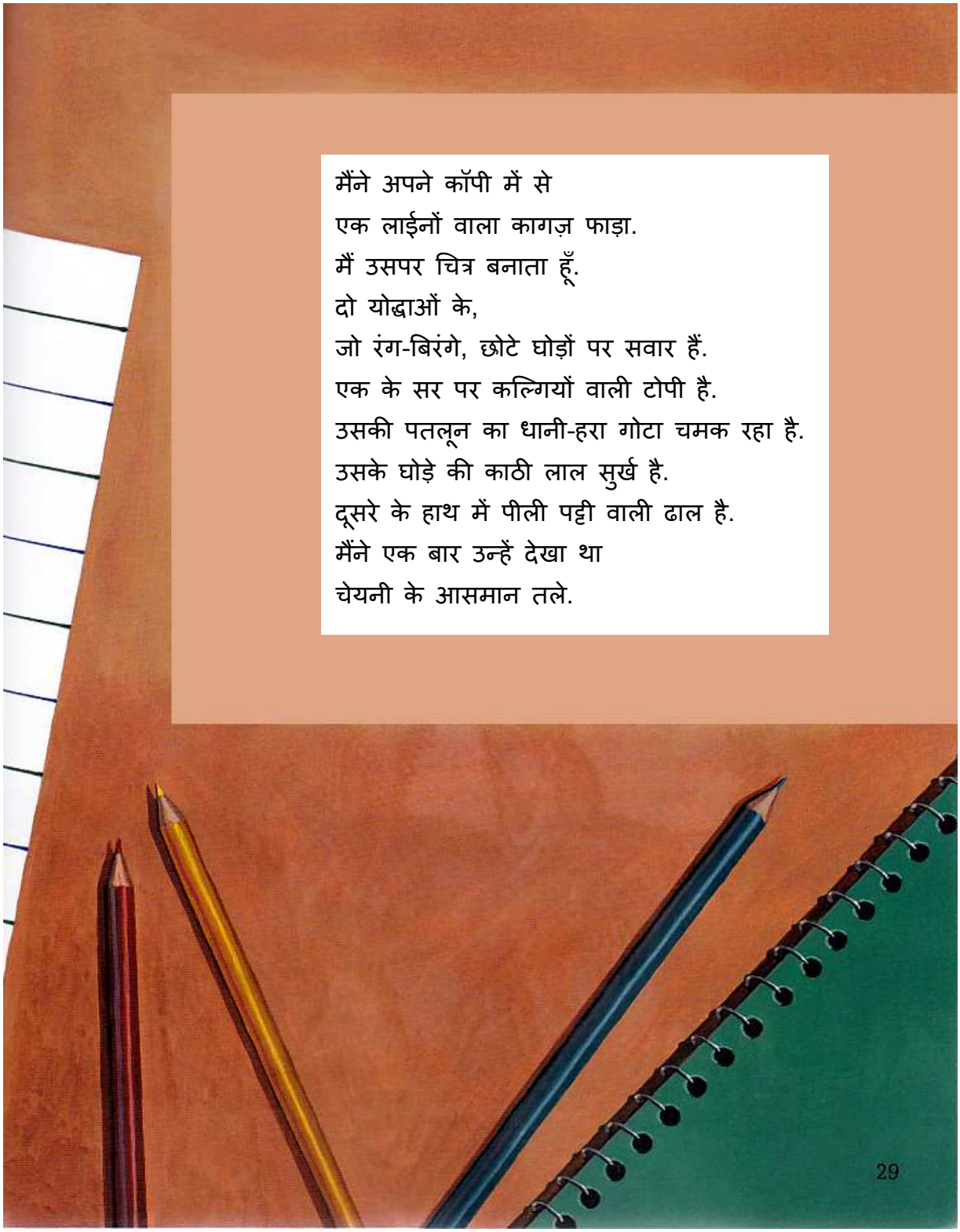

मैंने अपने कॉपी में से
एक लाईनों वाला कागज़ फाड़ा.
मैं उसपर चित्र बनाता हूँ.
दो योद्धाओं के,
जो रंग-बिरंगे, छोटे घोड़ों पर सवार हैं.
एक के सर पर कल्गियों वाली टोपी है.
उसकी पतलून का धानी-हरा गोटा चमक रहा है.
उसके घोड़े की काठी लाल सुर्ख है.
दूसरे के हाथ में पीली पट्टी वाली ढाल है.
मैंने एक बार उन्हें देखा था
चेयनी के आसमान तले.

पन्ने पर बनी लकीरें
पतली और एकदम सीधी हैं,
बिलकुल काँटों की बाड़ जैसी.

मैं बाड़ के तार को काटकर अन्दर घुसता हूँ.

और अपने ज़हन में
मैं भी उन योद्धाओं के साथ-साथ
सुनहले मैदान में आगे बढ़ रहा हूँ.

चेयने दुबारा!

पुस्तक का सन्दर्भ

1880 के अंत में अमरीका में वहां के आदिवासी बच्चों के लिए इस प्रकार के कोई 25 बोर्डिंग स्कूल थे. आदिवासी बच्चों को अपने माता-पिता की इच्छा के खिलाफ भी इन स्कूलों में पढ़ना अनिवार्य था.

इस तरह का पहला स्कूल आदिवासी बच्चों के लिए कार्लिस्ले, पेंसल्वेनिया में कप्तान रिचर्ड हेनरी प्राट के नेतृत्व में शुरू किया गया था. स्कूल का नारा था - "बर्बरता से सभ्यता की ओर" और उनका उद्देष्य आदिवासी बच्चों को उनकी पृष्ठभूमि और संस्कृति से बेदखल करना था.

अमरीका में कई अन्य स्थानों - ओरेगोन के चेमावा, ओक्लाहोमा के चिलोको, नेब्रास्का के जेनोआ, केंसास के हस्केल्ल में भी इसी तरह के स्कूल थे. पर सभी स्कूलों का एक ही मकसद था.

अमरीकी आदिवासी बच्चों के लिए अभी भी स्कूल हैं, पर अब ये स्कूल बच्चों की ज़रूरतों के प्रति ज्यादा संवेदनशील हैं - और कोशिश करते हैं की आदिवासी बच्चे अपनी कुशलताओं और विरासत पर गर्व करें और उसे संजो कर रखें.

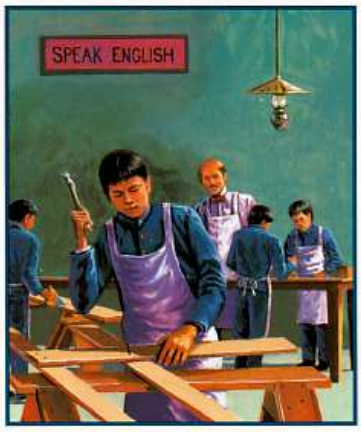

एक दिन यंग बुल अपने लोगों के बीच में है. पर अगले ही दिन उसे एक अजनबी दुनिया में ले जाकर पटक दिया जाता है - इस स्थान को गोरे लोग स्कूल बुलाते हैं.

वो तमाम चीज़ें जिनसे यंग बुल को प्यार था, लगाव था, वो सब चीज़ें अब पीछे छूट जाती हैं. उसे अपनी माँ के सिले कपड़े, अपनी भाषा और इतिहास सबको भुलाना पड़ता है. एक दिन जब यंग बुल अपनी पुरानी यादों को दुबारा संजोता है तभी उसे पहली बार मुक्ति का एहसास होता है.

"मदद" करने के नाम पर पर प्रभावशाली संस्कृति, आदिवासियों का नुकसान ही करती है. यंग बुल का संघर्ष, बच्चों में न्याय और इन्साफ की इच्छा को अवश्य जगायेगा."